art I Hour
[illegible] II

The end

उपनयन संस्कार

मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कई प्रकार संस्कार किये जाते हैं जिसमें शिक्षा के लिए उपनयन का बहुत अधिक महत्व है। उपनयन को ग्यारवाँ संस्कार कहा जाता है, इस संस्कार का वास्तविक शुरुआत तभी होता है जबकि छात्र गुरुकुल में रहकर वेदाध्ययन का प्रारंभ करते हैं लोगों को बाध्य रूप से से करने के लिए प्रेरित नहीं किया जाता था। परन्तु जो बच्चों को वेदाध्ययन करना चाहते थे उनके बच्चे वेद का अध्ययन करते थे। धर्मशास्त्रों के प्रमाणों से यह साबित होता है कि 400 ई० पू० तक यह संस्कार मुख्य रूप से कुछ अच्छे परिवार में ही किया जाता था। उपनयन ~~संस्कार~~ संस्कार के महत्व के पहले हमें देखना है कि उपनयन संस्कार कैसे किया जाता है तथा उसके लिए क्या विधान था,

प्राचीन काल में उपनयन संस्कार का इतना महत्व था कि अगर कोई ब्राह्मण का बच्चा भी गुरुकुल में वेदाध्ययन के लिए अयोग्य

Scanned with CamSc

होता था तो उसे इस संस्कार से वंचित कर दिया जाता दूसरे गुरु के पास जाने पर उन्हें फिर से इस संस्कार से संस्कारित किया जाता था। तभी वे वेदाध्ययन कर सकते थे। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि विवाह के समय भी इस संस्कार से लोग संस्कारित होते थे।

इस तरह यह संस्कार शिक्षा आरंभ के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता था। इसे शैक्षणिक संस्कार भी कहते थे। आज के युग में भी कुछ न कुछ रूप में इस संस्कार का महत्व है। परन्तु कालिक से विभिन्न कालेज और स्कूलों के स्थापित होने से इस संस्कार का महत्व घटता गया तथा इसका रूप पूर्णतया ही बदल गया। आप लोग इस संस्कार से संस्कारित करना आवश्यक समझते थे क्योंकि वैदिक साहित्य तथा ऋग्वेद उपनिषद आदि को संयोगकर रखना बहुत ही आवश्यक समझा जाता था। उस समय बच्चों को गुरुकुल में मौखिक रूप से वेदान्तों की शिक्षा दी जाती थी इसलिए उपनयन संस्कार द्वारा बच्चों में आध्यात्मिक संस्कार को भर दिया जाता था इस संस्कार से संस्कारित बच्चों में एक तरह की अध्यात्मक ज्योति के रूप प्रवेश करती थी, जिससे जो बच्चे तीक्ष्ण बुद्धि वाले होते थे कण्ठाग्र से दिव्यशक्ति आ जाती थी। इस तरह यह विद्या युग-युगान्तर तक मौखिक रूप से ही चलता रहा।

प्राचीन काल में उपनयन संस्कार का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता गया कि समाज में इस संस्कार से संस्कारित करना आवश्यक समझा जाने लगा। और लोग आवश्यक रूप से संस्कार को सम्पन्न करते थे। यदि यह संस्कार को निश्चित समय पर नहीं किया गया तो वह व्यक्ति अपने सामाजिक स्तर से अलग समझा जाता था। समाज में उन्हें वैवाहिक संस्कार से वंचित रखा जाता था।

Scanned with CamScanner

(2)

इसमें कोई संदेह की बात नहीं की आर्यण लोग वैदिक संस्थाओं तथा प्रारम्भिक शिक्षाओं के विकास के लिए उपनयन संस्कार को अधिक महत्व देते थे क्योंकि इसे धार्मिक संस्कार कहा गया है इस प्रकार से संस्कारित करना इतना आवश्यक समझा जाता था कि गूंगे तथा बहरे आदमियों को भी यह संस्कार दिया जाता था।

स्मृति युग में इस संस्कार से यह अर्थ निकाला जाता था कि शरीर को पवित्र करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को इस संस्कार से संस्कारित होना आवश्यक है था। यदि लोगों को कुत्ता या सियार काट लेता था तो इस संस्कार के द्वारा फिर से पवित्र किया जाता। इस तरह दिन प्रतिदिन इस संस्कार का महत्व घटता गया लोग इसके वास्तविक अर्थ को भूलते गये और यह अपना दूसरा ही रूप पकड़ता गया।

इस संस्कार का अवशेष प्रागैतिहासिक काल तथा Indo Iranian काल में भी मिलता है जिसका प्रमाण ऋगवेद देता है। यथा विजेता युद्धभूमि में विजय प्राप्त करते थे। यदि राजा अपने शासन प्रबंध में दक्ष होते थे या यदि वणिक वाणिज्य व्यवस्था में उन्नति करते थे तो लोग उसे उपनयन संस्कार का ही प्रतिफल समझते थे। बिना इस संस्कार के कोई भी कुमारी अपने जीवन के अच्छे पति प्राप्त करने की आशा नहीं रखती थी अतः यह संस्कार जितना आवश्यक लड़कों के लिए था उतना लड़कियों के लिए भी इस संस्कार से संस्कारित व्यक्ति ब्रह्मचर्य का पालन करते थे। लोगों में इतनी शक्ति आ जाती थी कि वह सांस्कृतिक आध्यात्मिक, कार्यकलापों तथा रहस्यों को समझने में सक्षम होते थे।

ब्राह्मण क्षत्रिय, तथा वैश्य सभी उपनयन संस्कार के लिए उपयुक्त थे वे एक ही साथ

Scanned with CamSc

साथ द्विज कहलाते थे। ऐसा माना जाता था कि इस संस्कार से उनका दूसरा आध्यात्मिक जन्म होता था। फिर प्रतिदिन इस संस्कार में कट्टरता आता गया जिससे प्रत्येक समाज में इसको मानना आवश्यक हो गया। इस संस्कार के बिना लोग द्विज नहीं कहला सकते थे।

अलबरोनी के विवरणों के अनुसार क्षत्रीय तथा वैश्यों से वैदिक शिक्षाओं का व्यवहारिक रूप में अधः पतन होता गया। ग्यारहवीं तथा बारहवीं शदी आते आते यह संस्कार क्षत्रिय तथा वैश्य समाज से प्राय लुप्त सा हो गया यह धर्म केवल ब्राह्मणों का माना जाने लगा कि ब्राह्मण ही वेदादि का अध्ययन कार्य का अध्ययन कर सकते थे तथा उपनयन संस्कार से संस्कारित हो सकते थे।

उपनयन संस्कार से संस्कारित होने के बाद छात्रों की मस्तिष्क में एक अपूर्व बुद्धि का संचार होता था। साथ ही साथ उसके जीवन में एक नए अध्याय की शुरुआत होता था छात्र विद्यालय तथा अध्ययन में रत हो जाते थे साथ ही साथ गुरु तथा शिष्यों के बीच एक सामंजस्य स्थापना होती थी जिससे छात्रों को जीवन के लाभ होता था। उपनयन संस्कार करना आवश्यक समझा गया।

ऐसा कहा जाता था कि यदि लोग इस संस्कार के नियमों को उचित ढंग से प्रतिपादित करते थे। तो मृत्यु भी उसके शरीर को नहीं छू सकता था।

उपनयन ~~कहा जाता~~ संस्कार कब किया जाना चाहिए इसके बारे में अनेक मत प्रचलित हैं मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मण बालक का गर्भ से आठवें वर्ष में, क्षत्रिय बालक का गर्भ से ग्यारहवें वर्ष में और वैश्य बालक का ~~गर्भ~~ गर्भ से बारहवें वर्ष में उपनीत संस्कार होना चाहिए।

Scanned with CamSc

अधिक ज्ञान प्राप्ति हेतु ब्राह्मण बालक का गर्भ के पाँचवे वर्ष में अधिक पराक्रम प्राप्ति के लिए क्षत्रिय को गर्भ के छठवे वर्ष में तथा अधिक धन की प्राप्ति के लिए वैश्य बालक का गर्भ से आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए।

उपनयन संस्कार के साथ ज्योतिष संबंधी विधान भी संबद्ध किया गया है। आजकल इन विद्वानों को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है। जैसे नक्षत्रों में हस्त, चित्रा, स्वाती, पुष्य अश्विनी धन निष्ठा तथा रेवती को विशेष उपयुक्त माना जाता है।

मध्यकालीन युग में यह संस्कार पवित्र पीपल के पेड़ के नीचे सम्पन्न किया जाता था। आज कल भी लोग पीपल के पेड़ को पवित्र मानते हैं।

उपनयन संस्कार के बाद प्रत्येक व्यक्ति यज्ञोपवीत धारण करता है।

मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मण का यज्ञोपवीत कपास का क्षत्रिय का यज्ञोपवीत सन और बबे सूत का और वैश्य का यज्ञोपवीत ऊन के सूत से होता था।

प्रत्येक द्विज के लिए यज्ञोपवीत धारण करना आवश्यक है। यज्ञोपवीत से सम्बन्धित गायत्री मंत्र ऋग्वेद की एक ऋचा है। संध्या को सम्पन्न करना धर्मशास्त्रों के अनुसार उपनयन के बाद आवश्यक है। अत्रि के अनुसार प्रत्येक आत्मज्ञानी द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) को दिन में तीन बार संध्या करनी चाहिए। इन तीन संध्याओं को क्रम से गायत्री (प्रातः कालीन), सावित्री (मध्यकालीन सरस्वती (सायंकालीन) कहा गया है।

मनुस्मृति में यह भी उल्लेख है कि प्रायः सन्ध्योपासन कर्म नहीं करता है वह शूद्र

के समान सम्पूर्ण द्विगकर्म से अधिवृहत करने के योग्य
है ।

Scanned with CamSc